“बगरू एवं सांगानेरी ब्लॉक छपाई का एक ऐतिहासिक अध्ययन”
(1950 से वर्तमान तक)

इतिहास में पीएच.डी उपाधि हेतु
शोध प्रस्तावना

शोध निर्देशिका

JV’n डॉ.गीता सिंह

शोधार्थी

JV’n कंचन

मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग

प्रबंधन एवं मानविकी संकाय

ज्योति विधापीठ महिला विश्वविद्यालय जयपुर, राजस्थान

पृष्ठभूमि :-

छपाई एकअद्भुत कलाकृति है ब्लॉक छपाई का उदगम स्थान चीन को माना जाता है माना जाता है की वहा 7वी शताब्दी से ब्लॉक छपाई प्रारम्भ हुई थी वहा के लोग अक्षरो जनित लकडी के छोट छोटे ठप्पे बनाते थे तथा उन ठप्पो को स्याही में डुबोकर कागज पर छापते थे चीन में वुड ब्लॉक छपाई बोद्ध धर्म से दृढ़ता से जुडी हुई है तांग राज्वंस में फेंझी नामक एक चीनी लेखक ने पहली बार अपनी पुस्तक युवान जियान सेंजी में उलेख किया है की झेन्गुवान अपने वर्षो के दोर के बाद बोद्ध धर्म के ग्रंथो को लिखने के लिए वुड ब्लॉक छपाई का उपयोग किया था

सबसे पुराना मोजुदा प्रिंट 1974 में सियान शानकसी चीन में एक उत्खनन में खोजा गया था जिसके तहत कागज की अलग अलग चादरे लकड़ी के ब्लॉक में दबा दी जाती थी फिर उसमे चित्र बनाये जाते थे आगे इसी से पुस्तकें छापी जाने लगी इस विधि से चीन में पहली स्वतंत्र पुस्तक हरीक सूत्र छापी गई थी तथा यहीं से यह कला यूरोप गई थी उस समय यूरोप में बड़े-बड़े चित्रकार होते थे। उनके चित्रों की स्वतंत्र प्रतिक्रिया को तैयार करना कठिन कार्य था। इसे शीघ्रतापूर्वक नहीं किया जा सकता था। अत :लकड़ी अथवा धातु की चादरों पर चित्रों को उकेर कर ठप्पा बनाया जाने लगा तथा वहां पर यह कला स्वतंत्र रूप से विकसित हुई और इस विधि से यूरोप में सबसे पहली पुस्तक पुस्तक 1430 में छापी गई थी

7वी शताब्दी की ठप्पा छपाई (चीन)

सर्वप्रथम होलैंड के एक चित्रकार लॉरेंट कोस्टर ने लकड़ी का प्रयोग करके सही ठप्पे तैयार किए गए थे जिन्हें ब्लॉक कहते थे तथा इन ब्लॉकों को व्यवस्थित करके कागज पर छापा जाता था

आधुनिक छपाई का तकनीक आविष्कारक जॉन गुटेनबर्ग को माना जाता है उन्होंने सर्वप्रथम छापेखाने की स्थापना की थी गुटेनबर्ग ने धातु के माध्यम से छपाई के लिए विभिन्न प्रकार के अक्षर बनाए जिसके लिए उन्होंने सीसा धातु का प्रयोग किया इस विधि की पहली पुस्तक 1453 में बाइबिल छापी गई थी जिसे भेड़ की खाल पर छापा गया था

भारत में छपाई का इतिहास 1556 के आसपास शुरू हुआ था इस युग में पहली छपाई मशीन गोवा में पुर्तगालियों द्वारा लगाई गई थी अंतरराष्ट्रीय संदर्भ में देखें तो यह कला गुटेनबर्ग की पुस्तक बाइबिल एक शताब्दी बार भारत में आई थी

विलियम मोरिस एक कलाकार था जिसने 19वी शताब्दी के अंत में नमूनों वाले वालपपेर और वस्त्रो के उत्पादन के लिए वुड ब्लॉक का उपयोग किया था मोरिस ने जिस वुड ब्लॉक का उपयोग किया था वह अभी भी विक्टोरिया संग्रलिय में रखा गया है जो अभी भी सिमित उपयोग में है

1900वी शताब्दी का लकड़ी का ब्लॉक

भारत में ब्लॉक छपाई के जगह जगह मूल केंद्र है। जहा छपाईहोती है। वो जगह निमन है।

- गुजरात
- पंजाब
- आन्द्रप्रदेश
- राजस्थान

गुजरात :-

गुजरात के कच्छ में बसा अज्रखपुर नामक छोटे से गाव में प्राक्रतिक रंगों का प्रयोग कर कपडो पर ब्लॉक प्रिंटिंग की जाती है इस गाव के नाम पर ही इस छपाई को अज्रख छपाई कहते है यह छपाई 400 वर्षो से अधिक पुरानी है गुजरात के कच्छ क्षेत्र में लाल और काले रंग के पशु तथा पाक्षेयो की आक्रतिया एवं नृत्ये करती अकर्तिया बनाई जाती है।इमली के बिज और फिटकरी से लाल रंग , हल्दी से पिला रंग और चुने से सफ़ेद रंग बनाया जाता है परम्परागत रूप से अज्रख छपाई में पहले प्राक्रतिक रंगों का प्रयोग किया जाता था परन्तु वर्तमान समय में कृत्रिम रंगों का इस्तेमाल होने लगा है क्यूंकि कृत्रिम रंगों की छपाई में कम समय लगता है

गुजरती ब्लॉक छपाई

गुजरती ब्लॉक छपाई

पंजाब :-

पंजाब की ब्लॉक छपाई इतनी प्रसिद्ध नहीं है। जितनी की राजस्थान की है।लेकिन फिर भी यहा अभी भी यह छपाई प्रचलित है यहां पर छिंपा समुदाय के लोग इस व्यवसाय में लगे है। यहां फूल पत्तियां एवं स्थल आकृतिया बनाई जाती है। रुपाकन आम तोर पर आम मोर व जाल से किया जाता है

पंजाब ब्लॉक छपाई

आंध्र प्रदेश :-

आंध्र प्रदेश की ब्लॉक छपाई कलमकारी छपाई के नाम से जानी जाती है। कलमकारी छपाई की सबसे खास बात यह है की इसमें वनस्पति रंगों का प्रयोग किया जाता है अर्थात इसमें किसी रासायनिक चीजों का प्रयोग नहीं किया जाता है यह आंद्रप्रदेश के मछलीपटनम में विकसित हुई थी इसकी दो मुख्य शेलीया है –

1. श्रीकालहस्ती कलमकारी शेली
2. मछलीपटनम कलमकारी शेली

1. कलमकारी की श्रीकालहस्त शेली में कलम का उपयोग विषय के मुक्त हस्त चित्रण और रंगों में भरने के लिए किया जाता है इसमें पूरी तरह हाथ से काम किया जाता है यह शेली मंदिरों और उसके आस –पास के क्षेत्रो में फेली हुयी थी इसलिए उसकी धार्मिक पहचान थी इस शेली में हिन्दू महाकाव्यों रामयण, महाभारत,पुराण आदि पोराणिक दृश्यों को दर्शाया गया है

श्रीकालहस्त कलमकारी छपाई

2. कलमकारी की मछलीपतनम शेली मुगलों व गोलकुंडा सल्तनत के काल में विकसित हुई थी मछलीपटनम कलमकारी में मुख्य रूप से पादप रंगों का प्रयोग लकड़ी के ब्लॉक के माध्यम से किया जाता है इसके लिए जिस कपड़े का

उपयोग किया जाता है वह आंद्रप्रदेश के मछलीपटनम प्रान्त में बनाया जाता है यह कला मुग़ल काल में दीवारों को सुन्दर बनाने के काम में आती थी ठप्पो द्वारा दीवारों पर आक्रतिया बनाई जाती थी

राजस्थान :-

हाथ से छपाई के महत्वपुरण केंद्र राजस्थान में जयपुर, बगरू, सांगानेर, पली, बाड़मेर है यहां की छपाई सामान्यतः छिपा समुदाय के लोग करते हैं सांगानेर अपने केलिको मुद्रित बिस्तर कवर ,रजाई ,और साड़ियो के लिए प्रसिद्ध है केलिको छपाई में रुपरेखा पहले मुद्रित होती है फिर उसमे रंग भरा जाता है बोल्ड पैटर्न एवं रंग लोकप्रिय है यहा डू रुखी छपाई भी प्रसिद्ध है इस तकनीक में कलाकार दोनों और छपाई करता है बगरू अपने स्याही बेगार छपाई और दाब्बू छपाई के लिए प्रसिद्ध है
बाड़मेर अपनी नीले - काले आउटलाईन के साथ लाल मिर्च की छपाई के लिए जाने जाते है जो फूलो से लदे पेड़ो से घिरा हुआ है अन्य प्रसिद्ध प्रिंट घोड़े, ऊंट, मोर और शेर के है जिसे सीकर और शेखावाटी छपाई खा जाता है

बगरू व सांगानेरी छपाई व्यवस्था :-

बगरू व सांगानेर प्राचीन काल (मध्यकाल) से ही छपाई के लिए प्रसिद्ध है। बगरू ब्लॉक छपाई के लिए तथा सांगानेर फूल पत्तियों की छपाई के लिए प्रसिद्ध है। बगरू एवं सांगानेर की मध्य की दूरी 26 किलोमीटर है। बगरू की छपाई का उत्पादन पहले सांगानेर जाता है। फिर वहां से भारत के अनेक राज्य एवं विदेशों में भेजा जाता है।

बगरू :-

बगरू जयपुर शहर से 32 किलोमीटर दूर स्थित है। जहां से एनएच 8 पास होता है। यह अजमेर दिल्ली को जोड़ता है। बगरू की तहसील सांगानेर है। जो बगरू से 26 किलोमीटर दूर है। बगरू भले ही एक छोटा कस्बा है। इस कस्बे में छींपा समुदाय के लोग सदियों से प्राकृतिक तरीकों से ब्लॉक प्रिंटिंग का कार्य कर रहे हैं। बगरू में इस समुदाय के लोग राजस्थान और राज्य के नजदीकी प्रदेशों से आकर यहां बसे। और यह अठारवीं सदी से चला आ रहा है बगरू प्रिंट का इतिहास लगभग पांच सदियों पुराना माना जाता है।
छींपा समुदाय ने अपनी परंपराओं पर टिके रहकर इस खूबसूरत प्रिंट को विश्व के कोने-कोने में पहुंचाया है।और अपनी कला, संस्कृति और परंपराओं की जड़ों को आज भी बगरूवासी अपने खून पसीने से सींचते हैं। हाथ से कपड़े पर की जाने वाली ब्लॉक

छपाई को अंतरराष्ट्रीय पहचान छिंपा समुदाय के लोगों ने दिलाई है।ब्लॉक छपाई में अप्रैल 2003 को कोठीवाल ने साड़ी डिजाइन में राष्ट्रीय अवार्ड जीता था उनके पिता राम स्वरूप व माता भंवरी देवी ने भी राष्ट्रीय व राज्य स्तर पर बहुत सारे पुरस्कार जीतेहै। और इन्होने बगरू को अंतर्राष्ट्रीय पहचान दिलाई है तथा बगरू निवासी व छिम्पा समुदाय आज भी अपनी कला संस्कृति व परंपरा को निभाता है।

बगरू	कस्बा
सांगानेर	तहसील
जयपुर	जिला
राजस्थान	राज्य
क्षेत्रफल	30 km^2
जनसंख्या	31229

2011 की जनगणना के अनुसार बगरू की जनसंख्या

पुरुष	महिलाएं	कुल
16239.08	14989.92	31229
52%	48%	100%

शिक्षा का स्तर :-

राष्ट्र की औसत शिक्षा	74.04%
राज्य की औसत शिक्षा	66.11%
बगरू की औसत शिक्षा	71.43%

बगरू छपाई व्यवस्था :-

बगरू छपाई के लिए प्रसिद्ध है।छपाई के लिए सबसे पहले सफेद कपड़े को हल्दी के पानी में डूबकर काफी समय रखा जाता है। फिर उस कपड़े को सुखों कर वह प्रेस कर साढ़े पांच से छह मीटर लम्बी टेबल पर बिछा दिया जाता इस टेबल पर पहले से टाट, हैण्डलूम कपड़ा और अछाड़ा वस्त्र की कई परतें होती हैं जिसको पिन-अप कहा जाता है जो ब्लॉक का दबाव सहने और कलर को ज्यादा फैलने से रोकने का काम करती हैं। और प्रिंट उकेरते समय कपड़ा हिले नहीं। इसके बाद सिद्धहस्त करीगर टेबल के चारों ओर खड़े होकर कपड़े पर ब्लॉक से वांछित डिजाइन उकेरने का कार्य करते हैं। हर कारीगर के साथ एक ट्राली होती है जिसमें रंग विशेष की ट्रे रखी होती है। इसी ट्रे में ब्लॉक को गीलाकर कपड़े पर मुद्रित किया जाता है।

यहां दो तरह की छपाई होती है। -

1. ब्लॉक छपाई
2. दाबू छपाई

1. **ब्लॉक छपाई** :- ब्लॉक छपाई भारत के 2 राज्यों गुजरात व राजस्थान (बगरू व सांगानेर)में प्रसिद्ध है यह एक लकड़ी का हथा होता है। जिसे सांजू कहा जाता है। उस हथे पर पहले कारीगरों द्वारा आकृति को डाला जाता है। फिर उस हथे को रंगों के साथ कपड़े पर छापा जाता है। इससे ही ब्लॉक छपाई या वूड छपाई कहा जाता है।

ब्लॉक छपाई

2. **दाब्बू छपाई**:- कपड़े को अतिरिक्त और अनावश्यक प्रिंटिंग से बचाने के लिए दाबू तकनीक का इस्तेमाल किया जाता है। दाबू एक प्रकार का पेस्ट है इस पेस्ट का लेप करने पर ब्लॉक से की जाने वाली प्रिंट कपड़े पर उन जगह नहीं उतरती जिस जगह को डिजाइन के लिए कारीगर खाली छोड़ना चाहतेहैं। छपाई में पहले काली मिट्टी, लकड़ी का बुरादा, गेहूं का बुरादा, चुना, इत्यादि को मिलाकर एवं गूंथकर एक पेस्ट बनाया जाता है। इस पेस्ट को दाब्बू पेस्ट कहते है । फिर उस पेस्ट को लकड़ी के ब्लॉक और स्क्रीन ब्लॉक द्वारा कपड़े पर छपाई कर दी जाती है। यही दाब्बू छपाई के नाम से जानी जाती है।

दाब्बू छपाई

बगरू छपाई में लाल, काला व भूरे रंग का प्रयोग सर्वाधिक किया जाता है। इन रंगों के निर्माण में देसी तरीके अपनाए जातेहै।जैसे कि

लाल रंग: आल की लकड़ी व फिटकरी से बनाया जाता है।

काला रंग-: लोहे को गुड़ के पानी मैं मिलाकर इस रंग को बनाया जाता है। फिर से 15 से 30 दिन भिगो कर रखा जाता है। फिर यह रंग तैयार होता है।

भूरा रंग-: लाल रंग में थोथा खनिज को मिलाकर यह तैयार किया जाता है।

बगरू छपाई के लिए प्रयुक्त कपड़ा : - प्राचीन काल में छपाई के लिए सूती कपड़े का प्रयोग किया जाता था लेकिन वर्तमान में आवश्यकता अनुसार सिल्क चंदेरी हाफ कॉटन आदि का प्रयोग किया जाता है।

प्राचीन काल में इस छपाई से केवल ओढना और घाघरा का ही निर्माण किया जाता था घागरे के लिए जिस कपड़े का उपयोग किया जाता था उसे फडद कहा जाता था लेकिन वर्तमान में स्कर्ट, सलवार, सूट, दुपट्टे, जैकेट, कुर्तियां कोटिया आदि बनाए जातेहै।इसके बेडशीट पिलो कवर मेजपोश आदि बड़ी संख्या में निर्मित किए जाते हैं जिसकी मांग देश के साथ साथ दुनिया के भी कोने-कोने में है।

सांगानेर:-

सांगानेर जयपुर से 16 किलोमीटर दूर है। यहां एनएच 21 लगता है। जो सांगानेर टॉक जयपुर आदि शहरों को जोड़ता है। सांगानेर तहसील में 147 गांव एवं दो कस्बेहै।सांगानेर जनसंख्या की दृष्टि से राजस्थान में पांचवी वी रैंक व जयपुर में दूसरी रैंक पर आता है। यहां की कुल जनसंख्या 969696 है। यह 710.21 किलोमीटर^2 में फैला हुआ है।

2011 की जनगणना के अनुसार सांगानेर की जनसंख्या

पुरुष	महिलाएं	कुल
510393	450393	969696
52.26%	47.36%	100%

राष्ट्र > सांगानेर > राज्य

सांगानेर में एक उत्कृष्ट नक्काशी दिगम्बर जैन मंदिर है। तथा यहां राजस्थान का एकमात्र अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा भी है।

सांगानेरी छपाई

सांगानेर ब्लॉक छपाई के लिए प्रसिद्ध है। यहां की छपाई व्यवस्था 16 , 17 शताब्दी में मुगल मराठा साम्राज्य के काल में हुई थी यह छपाई व्यवस्था मुगलों द्वारा गुजरात से सांगानेर लाई गई थी कपड़ों की छपाई के लिए जो कलर उपयोग में लिया जाता था उसे ईस्ट इंडिया कंपनी के द्वारा विशिष्टता प्रदान की गई थी सांगानेरी छपाई में बहुत सारी डिजाइन व आकृतियों का प्रयोग किया जाता है। जैसे गुलाब का फूल, सूरजमुखी का फूल इत्यादि इसके अलावा भी फूल एवं पत्तियां आदि भी बनाई जाती है।

ब्लॉक

सांगानेरी छपाई में अलग-अलग रंगों का प्रयोग किया जाता है। इसमें रंग का प्रयोग मिश्रण के साथ किया जाता है। सांगानेरी छपाई के लिए सूती कपड़े का प्रयोग किया जाता है। तथा यह कपड़े बिल्कुल हल्के होतेहै।जो पहनने में आरामदायक होते है। सांगानेरी छपाई के लिए छिम्पा समुदाय के लोग काम करतेहै।जो ज्यादातर मुस्लिम लोग है। इनमें महिलाओं का भी काफी योगदान है।
छपाई करने के लिए लकड़ी का ब्लॉक काम में लिया जाता है। जिसको बनाने के लिए अद्भुत कारिगर की आवश्यकता होती है। जो इसको बनाने में निपुण होतेहै।

सांगानेरी छपाई के लिए पहले सफेद कपड़ा काम में लिया जाता है। फिर उसे हरडा पाउडर में घोलकर पिला किया जाता है। फिर उसे सुखाया जाता है। तथा उसके बाद छुपाई उस कपड़े पर की जाती है।
छपाई करते समय उस कपड़े पर लकड़ी का बुरादा बिछाया जाता है। ताकि बुरादा नमी को सोख ले और फिर उसमें आवश्यकतानुसार रंग दिया जाता है। उसके बाद फिर से उसे सुखाया जाता है। तथा बाद में उसे प्रेस किया जाता है।
उस कपड़े का प्रयोग विभिन्न प्रकार के सोल, बेडशीट, दुपट्टे, जैकेट, आदि बनाने के लिए काम में लिया जाता है।
इस पूरी प्रक्रिया में काम आने वाला पानी सरस्वती नदी से लिया जाता था जो

आज के समय में विलुप्त हो चुकी है। तथा जो कलर और ब्लॉक प्रयोग में लिया जाता था वह पंजाब व सिंध के कलाकारो के द्वारा बनाया जाता था

सांगानेरी छपाई

उद्देश्य

- बगरू एवं सांगानेरी छपाई का अध्ययन करना ।
- समाज की आर्थिक स्थिति के स्तर में छपाई का योगदान का अध्ययन करना ।
- बगरू व सांगानेरी ब्लॉक छपाई के व्यापर व्यवसाय का अध्ययन करना ।
- बगरू व सांगानेरी छपाई में नई तकनीक का अध्ययन करना ।

साहित्य का अवलोकन

1. राणा एन 2013 shodh.inflibnet.ac.in>bitstream बगरू की छपाई, टाई, डाई राजस्थानी वस्त्रो का एक अभिन्न अंग है तथा यह छपाई भारतीय कलाओ को अनेक रूप में प्रदर्शित करती है तथा विदेशी यात्रियों के द्वारा अलग-अलग समय में सभी कलाओ को प्रसन्न किया गया है जो एक कपड़े पर आकृति एवं कलाओ को व्यक्त करता है अनेक स्रोत है जो सफाई रंगाई एवं पेंटिंग के बारे में विस्तृत जानकारी भी देते हैं तथा यह सफाई व्यवस्था अभी तक अस्तित्व में है

2. Dell et.at. 2014 shodh.inflibnet.ac.in>bitstream लकड़ी के ब्लॉक के अलावा स्क्रीन एवं रोलर तकनीक का भी प्रयोग किया जाता है इन तकनीक के द्वारा कपड़े पर कलर का प्रयोग किया जाता है परंतु लकड़ी के ब्लॉक द्वारा सफाई करने से अच्छा परिणाम मिलता है जो कि स्क्रीन एवं रोलर तकनीक के द्वारा संभव नहीं है

3. सेनगुप्ता 2008 shodh.inflibnet.ac.in>bitstream छपाई के अंदर काम करने वाले कलाकारों को कुछ सुधार की आवश्यकता है जैसे कि हैंडीक्राफ्ट एंड हैंडलूम में नई तकनीक का प्रयोग किया जाए और उनको सलाह दी जानी चाहिए जिससे कि वह आधुनिक रूप से सुधार करें इससे अच्छे से अच्छी गुणवत्ता का कपड़ा बना सके और उस कपड़े पर किसी भी प्रकार का रुखापन नहीं रहे जिसके लिए झूट और कपास का प्रयोग करें

4. नंदी 2008 shodh.inflibnet.ac.in>bitstream राजस्थान के सांगानेर में हस्तशिल्प उद्योगो के द्वारा यह बताया जाता है कि सदियों से राजस्थान में सांगानेर शहर के हाथों से बने ब्लॉक प्रमुख केंद्रों में से एक रहा है अनेक महानगरीय शहरों में छपाई एवं ब्लॉक उत्पादों की मांग आज भी हो रही है

इसके अलावा विदेशों में भी इसकी मांग है यह कहा जाता है कि राजा सवाई जय सिंह द्वितीय (1688 - 1743) जब जयपुर शहर के निर्माण के समय गुजरात और मालवा (मध्य) के कुछ छपाई करने वाले परिवारो को आमंत्रित किया था

5. यादव 2010 shodh.inflibnet.ac.in>bitstream यादव के अनुसार कोटा डोरिया साडी को एक ब्लॉक छपाई के तहत और एक embroidery मशीन के तहत बनाया जाये तो एक अच्छा परिणाम और मार्किट में मिलने वाली अच्छी कीमत ब्लॉक छपाई से ही मिलती है

6. सखी क्राफ्ट 2010 shodh.inflibnet.ac.in>bitstream सखी क्राफ्ट के अनुसार ब्लॉक छपाई एक बहुत ही आसान तरीका है कपरे पर छपाईकरने के लिए जो ब्लॉक काम में लिया जाता है वह ब्लॉक बनाना एक मुखिय काम हैउस ब्लॉक को बनाते समय उसकी गुणवता और सवछता का धयान रखना पड़ता है लकड़ी के ब्लॉक पर बनाई हुई आकृति को रग में डूबोकर कपड़े पर छपाई की जाती है वैसे तो ब्लॉक छपाई भारत के अनेक राज्यों एवं अलग अलग जगहा पर है पर प्रत्येक राज्य और अलग अलग जगहों की छपाई अपने आप में एक अनोखी पहचान रखता है

7. भटनागर 2004 shodh.inflibnet.ac.in>bitstream भटनागर के अनुसार ब्लॉक छपाई लंबे समय से चली आ रही है भारत में कपड़े पर छपाई करना एक अलंकरण और दिलचस्प तरीका है

जो भारत के प्रत्येक क्षेत्र में लोगों की एक अच्छी पसंद एवं एक विकल्प है जो की मुख्य विशेषताओं के साथ साथ रंग संयोजन, शैली का चयन और धर्म से प्रभावित जीवन का तरीका, भावनात्मक विचार और प्रक्रति को दर्शाता है यह भारत की उत्तर से दक्षिण एवं पूर्व से पश्चिम तक आय के रूप में देखे जाने वाला एक व्यवसाय है

शोध प्रश्न

1. 19वीं शताब्दी में बगरू की छपाई की स्थिति कैसी थी ?
2. बगरू व सांगानेरी छपाई व्यापारिक रूप से सफल थी या नहीं ?
3. 19वीं शताब्दी से अब तक बगरू व सांगानेरी छपाई कला में उन्नति हुई है या अवंती हुई है?
4. बगरू एवं सांगानेरी छपाई की वर्तमान स्थिति क्या है ?

शोध परिकल्पना

अपने समाज में जेसा की विधित है की छपाई का इतिहास 7 वी शताब्दी से माना जाता है छपाई का उदगम चीन में हुआ था वहा से यह छपाई देश के सभी कोनो में फेली थी भारत में छपाई का इतिहास 16 वी शताब्दी से माना जाता है उस समय छपाई को समाज में काफी ऊँचा दर्जा प्राप्त था तथा इस छपाई व्यवस्था से लाखो लोगो को रोजगार मिलता था लेकिन धीरे धीरे वर्तमान समय तक आते आते हाथ की छपाई व्यवस्था के कार्य में कमी आने लगी क्योकि हाथ की छपाई का स्थान स्क्रीन व रोलर छपाई ने ले लिया क्योकि हाथ से की जाने वाली छपाई से विभिन्न त्वचा सम्बन्धी बीमारिया होने लगी तथा हाथ से की जाने वाली छपाई में ज्यादा समय लगता है इन्ही सभी बातो में कितनी सच्चाई है जानकारी प्राप्त करने के लिए तथा इस जानकारी को आगे समाज तक पहुचने के लिए मैने इस विषय को अपने शोध के लिए चुना है

शोध पद्धति

प्रस्तावित शोध प्रबंध में ऐतिहासिक शोध पद्धति का प्रयोग किया जाएगा जो ऐतिहासिक अध्ययन से संबंधित है इसमें विभिन्न कारकों के मध्य व्याख्या व विच्छेदन किया जाएगा

इसके संदर्भ में विभिन्न किताबों का प्रयोग किया जाएगा जिसके लिए जयपुर व उसके आसपास के विभिन्न पुस्तकालय की सहायता ली जाएगी

अध्ययन में बगरू व सांगानेरी छपाई व्यवस्था का अवलोकन करने के लिए मानव शास्त्रीय स्रोतों की सहायता ली जाएगी यह अध्ययन मुख्यतः विश्लेषणात्मक ऐतिहासिक विकासात्मक होगा इस अध्ययन के लिए विभिन्न पुस्तकों दस्तावेजों की सहायता ली जाएगी

अपने शोध की विषय को प्राचीन मूल ग्रंथो, बगरू व सांगनेर के व्यक्तियों से तथा यहां की बाजार व्यवस्था से प्राप्त किया जाएगा तथा आधुनिक काल के विद्वानों द्वारा प्राप्त ग्रंथों से प्राप्त किया जाएगा

इसके लिए राजस्थान विश्वविद्यालय की सेंट्रल लाइब्रेरी में उपलब्ध किताबो का अध्ययन कर और पत्र पत्रिकाओ, नेट आदि की सहयता ली जाएगी

अध्ययन रूपरेखा

प्रस्तुत शोध को 7 अध्याय में विभक्त किया गया है

1. प्रथम अध्याय - ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

2. द्वितीय अध्याय - स्रोत सामग्री का परिचय

3. तृतीय अध्याय - 19वीं शताब्दी में भारत में ब्लॉक छपाई का योगदान

4. चतुर्थ अध्याय - वर्तमान समय में भारत में ब्लॉक छपाई का योगदान

5. पंचम अध्याय - बगरू का सांगानेरी छपाई में लगे कुशल कारीगरों के व्यवसाय विकास का अध्ययन करना

6. षष्ट अध्याय - बगरू व सांगानेर ब्लॉक छपाई की बाजार स्थिति का अध्ययन करना

7. सप्तम अध्याय - उपसंहार

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

प्रथम अध्याय में भारत में विस्तृत संपूर्ण ब्लॉक छपाई का परिचय दिया जाएगा तथा साथ ही वर्तमान समाज का भी संक्षिप्त परिचय दिया जाएगा

2. **स्रोत सामग्री का परिचय** :-

ब्लॉक छपाई की जानकारी के लिएऐतिहासिक सामग्री का परिचये दिया जायेगा तथा लोगों से पता करके उनसे प्रश्न पूछकर तथा बाजार की व्यापारीक स्थिति देखकर आदि स्रोत सामग्री का प्रयोग किया जाएगा

3. 19वीं शताब्दी में भारत में ब्लॉक छपाई का योगदान :-

19वीं शताब्दी में भारत में ब्लॉक छपाई ने समाज को कैसे प्रभावित करती थी तथा आर्थिक रूप से कैसे योगदान देती थी पर प्रकाश डाला जायेगा

4. वर्तमान समय में भारत में ब्लॉक छपाई का योगदान :-

बगरू सांगानेरी छपाई का वर्तमान में समाज में क्या प्रभाव थे तथा किस तरह अर्थव्यवस्था को प्रभावित करती है आदि कारको पर प्रकाश डाला जाएगा

5. बगरू की छपाई में लगे कुशल कारीगरों के व्यवसाई विकास का अध्ययन करना :-

इस अध्याय में बगरू व सांगानेर छुपाई में लगे कुशल कारीगरों को 19वीं शताब्दी में कितना रोजगार मिलता था तथा वर्तमान समय में इनको कितना रोजगार मिल रहा है का अध्ययन करना है

6. बगरू एवं सांगानेरी ब्लॉक छपाई की बाजार स्थिति का अध्ययन करना :-

इस अध्ययन में बगरू व सांगानेरी ब्लॉक छपाई की 19वी शताब्दी में बाजार में मांग कितनी है तथा बिक्री कितनी है एवं वर्तमान में मांग और बिक्री कितनी है का अध्यन करना है

7. उपसहार :-

सप्तम व अंतिम अध्याय में ब्लॉक छपाई की स्थिति को दर्शाते हुए इस निष्कर्ष निकला गया है कि 19वी शताब्दी में छपाई की स्थिति बहुत अच्छी थी कारीगरों की इसे अच्छी कमाई होती थी लेकिन वर्तमान में इसकी स्थिति में गिरावट आ रही है तथा वर्तमान में इसकी बाजार में मांग कम हो रही है का विवेचन किया जायेगा

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Pandya Aand Vishwakarma A 2010 Rogan the traditional hand painted tertile of Gujrat Indian Journal of traditional knowledge (4) :644-650

2. Kaur R and Brar P2015. A brief review of block printing in India with comparative Analysis of Ajrak and Sanagner styal of printing . Asian Resonance.2(4) 96-100

3. Joshi V2011 blocks and printing style of Bagru and Sanganer. Retrirved from http:/www.handprintguideraajsthan.in

4. A prelude to Block printing retrieved from https:/ strandofsilk.com /journey map / Block printing / introdation

5. Vats,N 2011.role tradition Textile Hand of barmer in employment generation IOSR journal of humanities and social science (IOSR-JHSS) 18(2) PP59-62 www.iosrjournals.org

6. The art of hand block printing.retrival from http:/ www.fibre2 fashion.com

7. Ishrath2009 revival of traditional and Eco friendly hand block printing in bagru rajasthanretrieved from http:/core.ac.uk/download/pdf/29072510.pdf

8. Block printing retrieved from http://www.craftmark.org/sites/default/files/p004% 20 block printingbagru.pdf

9. Ronald EI2012 pattern of Identity: Hand Block Printing and resist dyed textiles of nural Rajesthan. Retrieved from http:// core.ac.uk/donload/pdf/290725ro.pdf

10. Block printing in Bagru retrirved from http://maptia.com//nom adichabit/stories/block printing in bagru

11. Hooda R.P2003 statistics for business and economise,3rd macmillan Indion ltd, Delhi 855 p

12. Me Quaid M 2005 Extreme textilles princetion architectural press New Yourk USA

13. Indaian journal of traditional knowledge Vol7(1) January 2008 pp 93-97

14. Kumar A 2002 resarch methodology in social science sarup and sons New Delhi

15. Rajasekaran S and Amalraj R(2002) generating textile designs using cellular automata Indian Journal of fibre and textile research vol 27 september 2002 pp 242-247

16. Rajasthan trxtiles

17. www.fiber2fashion.com

18. htttp://.Wikipedia.org/wiki/sanganer

19. http.//rajasthantextiles.com/sanganer/sanganer/html.

20. http://www.woodprintblocks.com/.

21. http://www.craftdartisans.com/hand-block-printing.

22. http://www.theindianblockcompany.com/.

23. Singh , M. 2000. Handcrafted Indian Texitiles: Tradition and Beyond. Roil Books, New Delhi.

24. कुमार सुनील ,भारतीय छापाचित्र कला आदि से आधुनिक काल तक ,भारतीय कला प्रकाशन ,दिल्ली 2000 .पृष्ठ सं .51,55, 62, 122

25. जोशी लक्ष्मण शास्त्री ,भारतीय संस्कृती कोश खंड 7 वा चोथा संस्करण भारतीय संस्कृती ,मंडल ,पुणे ,2010 पृष्ठ. 426, 429

26. पवार सुभाष महान भारतीय चित्रकार ,सो गोरी सुभाष पवार प्रकाशन, मुम्बई 2012 पृष्ठ सं .95, 139